<u>मनोविज्ञान के सम्प्रदाय(Schools of Psychology)</u>

4. मनोविश्लेषणवाद (Psychoanalysis) :

वियना के सिगमंड फ्रायड (1856-1939) इस मनोविश्लेषणवाद के मुख्य प्रवर्तक माने जाते हैं। फ्रायड (S. Freud) ने 'सम्मोहन' या 'मोहनिद्रा' विधि को मूर्छा और स्नायु रोगों की चिकित्सा के लिये अपनाया था। इस विधि से फ्रायड रोगियों को अचेतन अवस्था में ले जाते थे फिर उनसे प्रश्न पूँछना शुरू करते थे। इस मोह निद्रा के सहारे रोगी ऐसी बातों को बता देता था जिससे उसके संवेगात्मक कष्टों का पता चल जाता था। रोगी मोह निद्रा की अवस्था में अपनी उन सारी बातों को अज्ञात चेतना के सहारे प्रकट कर देता था जिनको वो चेतन अवस्था में बताने में लज्जा, भय या संकोच करता था।

फ्रायड ने कुछ युक्तियाँ या विधि निकाली मानव मन का विश्लेषण करने के लिये तथा जो तथ्य मन का गहन अध्ययन करने पर मिले और इन तथ्यों के आधार पर जिन सिद्धान्तों का अध्ययन किया गया या निरूपण किया गया उन सिद्धांत को मनोविश्लेषणवाद का नाम दिया गया। आरनेस्ट जोन (Earnest Jones) इस विषय में कहते हैं मनोविश्लेषण का प्रयोग किया जाता है तीन वस्तुओंको बताने के लिये।

1. मनोविश्लेषण का अर्थ है चिकित्सा की एक विशेष विधि विवना के प्रोफेसर फ्रायड ने इसका प्रयोग स्नायुविक रोगों के कुछ विशिष्ट वर्ग के लोगों को ठीक करने के लिये किया था। इस तरह से यह सबसे पहले नियंत्रित अर्थ में प्रयोग हुआ था।

2. मनोविश्लेषण का अर्थ है गहरे स्तरों की खोज की एक विशेष प्रविधि ।

3. आखिरी में इस शब्द का प्रयोग ज्ञान के एक क्षेत्र के लिये भी किया जाता है।

इस मनोविश्लेषवादी सम्प्रदाय में तीन प्रमुख मनोवैज्ञानिक है - फ्रायड एडलर और युग। इन लोगों ने अलग-अलग तरह से अचेतन मन की व्याख्या की है। इन तीनों मनोवैज्ञानिकों का वर्णन इस प्रकार से है -

फ्रायड: फ्रायड पहले मनोवैज्ञानिक है मनोविश्लेषणवादी सम्प्रदाय के इन्होंने मन के तीन स्तरों को बताया है। चेतन, अचेतन और अवचेतन मन के अज्ञात या अचेतन मन की तुलना में चेतन मन ज्यादा छोटा होता। हमारे अचेतन मन में तमाम संवेग, अतृप्त भावनायें और आवेग दबे पड़े रहते हैं। फ्रायड मन की तुलना समुद्र में पड़े किसी हिम खण्ड से करते हैं। (Ice berg) जिसका ज्यादातर भाग पानी की सतह के नीचे होता है अतः इस तरह से चेतन मन बहुत छोटा होता है तथा अचेतन मन ज्यादा प्रबल होता है। परन्तु दोनों ही भाग मन के क्रियाशील रहते हैं। मनुष्यों की भावनाएँ और इच्छाएँ अज्ञात चेतना में इकट्ठा हो जाती है। ये भावनाएँ और इच्छायें अतृप्त होती है और ये निष्क्रिय नहीं होती है। सामाजिक या दूसरे कारणों के कारण व्यक्ति इनको चेतन मन में आने से रोकता है। इस तरह चेतन और अचेतन मन की शक्तियों में निरन्तर संघर्ष जारी रहता है।

फ्रायड ने तीन शक्तियाँ बताई है जो मन पर शासन करती हैं। ये हैं इदम, अहम् परम। (Id, Ego, Super Ego) - इनकी व्याख्या इस तरह से है।

इदम् (Id) : इसका आनुवंशिकता से सम्बन्ध होता है। इसमें व्यक्ति के जन्मजात गुण व्याप्त होते हैं। इसमें जो विचार और वस्तु की चेतना पायी जाती है वह व्यक्ति की नहीं होती है, लेकिन हाँ ये व्यक्ति को मानसिक शक्तियों का और वृत्तियों का स्रोत जरूर होता है। यही दमित इच्छाओं और वासनाओं का आधार होता है। इसमें विवेक नहीं होता है इसका कोई सम्बन्ध नहीं होता है। इसका सम्बन्ध होता है काम प्रवृत्ति से जिसको फ्रायड ने लिबिडो (Libido) कहा है।

अहम् (Ego): इसका विकास होता है बाहरी पर्यावरण में ये इदम् का एक अंश होता है। ये चेतना होती है और ये नियन्त्रण करता है अचेतन मन की अवांछित इच्छाओं पर ये व्यक्तियों का 'साधार ण अन्तःकरण' होता है। इसमें व्यक्ति की अच्छी और खराब सब तरह की इच्छायें विद्यमान होती हैं।

परम् अहम् (Super Ego): इसका काम है बुरी इच्छाओं को चेतन मन में आने से रोकना। इसका काम है अहम (EGO) पर शासन करना। ये चेतन और अचेतन मन के बीच प्रहरी का काम करता है। फायड कहते हैं कि इदम् का आधार है सुख और अहम का आधार है वास्तविकता इनकी वजह से व्यक्ति की सभी "मानसिक क्रियायें " सुख सिद्धान्त से प्रेरित होती है।

एलफ्रेड एडलर (Alfred Adler): एडलर मनोविश्लेषणवाद के दूसरे मनोवैज्ञानिक है। फ्रायड के साथ एडलर ने बहुत दिनों तक काम किया लेकिन एडलर का फ्रायड के साथ सैद्धान्तिक मतमेत था फ्रायड सारी क्रियाओं के आधार में काम भावना को प्रधान शक्ति या प्रेरणा मानते हैं। इसके विपरीत एडलर का विचार है कि जीवन एक संघर्ष है व्यक्ति की व्यक्तितत्व का विकास करने के लिए कुछ इच्छाएँ, अभिलाषाएँ और मानसिक जरूरतें होती हैं। इसी कारण एडलर इन सब बातों को ध्यान में रखकर व्यक्ति के लिये शक्ति पाने की इच्छा को या अभिलाषा को एडलर ने जीवन कार्यों का आधार माना है और महत्व दिया है। भावना ग्रन्थियों के कारण जीवन के हर क्षेत्र में व्यक्ति का व्यवहार असाधारण हो जाता है। 'एडलर' कहते हैं सभी तरह के रोग का आधार या सभी तरह के मानसिक रोगियों के रोग का कारण कोई अपराध नहीं होता है, बल्कि हीनता की भावना होती है। एडलर ऐसा विचार रखते हैं कि हीनता की भावना से बचने के लिये व्यक्ति एक विचित्र जीवन शैली (Style of Life) को अपनाता है। ऐसी भावना अज्ञात चेतना में होती है। इस तरह से व्यक्ति अपनी कमजोरियों को छिपाना चाहता है और अपनी श्रेष्ठता का प्रदर्शन करने के लिये एक विचित्र या अनोखी जीवन शैली को अपनाता है। व्यक्ति जिस सामाजिक व्यवहार का

प्रदर्शन करता है उसमें ज्ञात और अज्ञात दोनों प्रकार की चेतना का सहयोग होता है। इन विचारों को 'एडलर' ने 'वैयक्तिक' या 'मनोविज्ञान' कहा है।

कार्ल जुंग (Carl-Jung) : जुग इस सम्प्रदाय से सम्बन्ध रखने वाले तीसरे मनोवैज्ञानिक है। जुंग के सिद्धान्त फ्रायड और एडलर से एकदम अलगाव रखते हैं। जुंग ने अपना काम किया है साहचर्य परीक्षण और विश्लेषण पर इन परीक्षणों से व्यक्ति की मानसिक ग्रन्थियों का अनुमान लगाया जा सकता है। जुंग दो बातों में फ्रायड से मतभेद रखते हैं।

1. फ्रायड बचपन में बनी भावना ग्रन्थियों को मानसिक रोगों का कारण बताते हैं और मानते भी हैं। जबकि जुंग अतीत को बातों के साथ वर्तमान परिस्थितियों को भी कारण बताता है।

2. काम भावना (Libido) को जुंग ने बहुत विस्तृत अर्थों में लिया है। ये जीवन की प्रमुख शक्ति होती है जो दो रूपों में दिखायी पड़ती हैं पहली कामवासना सम्बन्धी प्रवृत्ति और दूसरी जीवन शक्ति पाने की प्रवृत्ति।

शिक्षा में मनोविश्लेषणवाद का योगदान (Contribution of Psycho-analytic School in Education) : इस सम्प्रदाय का शिक्षा में बहुत गहरा प्रभाव पड़ा है। इस सम्प्रदाय का प्रभाव इस प्रकार से है -

1. ये वाद मानसिक अन्तर्द्वन्द्व को समझने और उनको दूर करने में सहायता करता है।

2. आनुवंशिकता और पर्यावरण व्यक्ति के विकास मुख्य तत्व होते हैं। इनका सम्बन्ध अचेतन मन से होता है।

3. शिक्षा का सम्बन्ध होता है बालक के सामाजिककरण से ऐसा विचार जुंग महोदय रखते हैं और इसका समर्थन भी करते हैं।

4. शिक्षा से सम्बन्धित सैद्धांतिक और व्यावहारिक दोनों पक्षों पर मनोविश्लेषणवाद ने अपना प्रभाव डाला। अज्ञात चेतना या अचेतन मन का सीखने की प्रक्रिया में बहुत महत्वपूर्ण स्थान है।

5. एक प्रमुख काम है शिक्षा का और वो है मूल प्रवृत्तियों का शोधन इसमें मनोविश्लेषणवाद से बड़ी सहायता मिलती है।

6. बच्चे के प्रारम्भिक जीवन के अनुभवों और संस्कारों का शिक्षा में या शिक्षा प्रक्रिया में बड़ा योगदान है। जो भावना ग्रन्थियाँ शैशय या बाल्यकाल में पड़ जाती है वो बालक के भावी जीवन और व्यवहार को प्रभावित करती है।

7. प्रकृतिवादियों की तरह ही मनोविश्लेषणवाद ने बालक के व्यक्तित्व विकास में 'स्वतन्त्रता' के विकास पर बल दिया है।

8. मनोविश्लेषणवाद ने शिक्षा में संवेगों के विकास पर या संवेगों के महत्व पर प्रकाश डाला है।

9. बच्चों में कुसमायोजन के कारणों का पता मनोविश्लेषणवाद की मदद से लगाया जा सकता है। समायोजन की प्रक्रिया को समझने में ये वाद बहुत सहायक साबित हुआ है।